ओं संविच्छक्त्यै नमः ॥

श्री

पञ्चस्तवी

पदच्छेद-अन्वय

और

साधारण भाषाटीका सहित

असंख्यैः प्राचीनैर्जननि जननैः कर्मविलया-
द्गते जन्मन्यन्तं गुरुवपुषमासाद्य गिरिषम्
अवाप्याज्ञां शैवीं क्रमतनुरपि त्वां विदितवान्
नमेयं त्वत्पूजास्तुतिविरचनैरेव दिवसान् ।

संपादक तथा प्रकाशक

श्री राम शैव (त्रिक) आश्रम

फतेहकदल—श्रीनगर

॥ सर्वाधिकार सुरक्षित ॥

यह सर्व सुखदायी हिन्दी निबन्ध सादर श्री गुरु चरणों में
समर्पण किया जाता है ।

पंचस्तवी जैसा कि इस के नाम से ही विदित होता है, पांच स्तवों का संग्रह है जिस में देवी अथवा शक्ति की स्तुति की गई है। काश्मीर प्राचीन काल से ही शक्ति का उपासक रहा है और शाक्त, तान्त्रिक, शैव तथा विकादि मतों का केन्द्र रहा है। पञ्चस्तवी यहां का सर्व प्रिय और सर्वोत्तम स्तोत्रग्रंथ माना गया है। यहां के नर नारी, बूढे, युवक तथा बच्चे इस के मधुर श्लोकों का गान करके जहां मनो विनोद प्राप्त करते हैं वहां इस के गूढार्थ के विमर्शन से आध्यात्मिक शान्ति भी प्राप्त कर पाते हैं। हर पर्व पर, हर देवस्थान पर सायं प्रातः इस के श्लोकों का गायन किया जाता है।

यह ग्रन्थ लगभग २००० वर्ष पुराना बताया जाता है। इस के लेखक के विषय में कोई ऐतिहासिक प्रमाण उपलब्ध नहीं। लोक गाथाओं के अनुसार, जो परम्परा से प्रचलित हैं, कोई पुरुष इसे धर्माचार्य की कृति बताते हैं परन्तु इस की पुष्टि भी इतिहास द्वारा नहीं होती। कुछ लोगों का विचार है कि जब शङ्कराचार्य दिग्विजय करते हुए बौद्ध आदि मतों को परास्त करके श्रीनगर पहुंचे तो यहां के एक साधारण हिन्दु घराने ने इनका अतिथि सत्कार किया। एक रात के लिए हर एक घर का प्रबन्ध रहा परन्तु आग का कोई न रहा। सर्दी के कारण इन्हों ने आग दूंडी पर न मिली इन्हें और इनके साथियों को दुःख में पड़ा देख उस घराने की एक छोटी सी लड़की उनके पास गई और उस ने चूल्हे में पड़ी लकड़ी को खोली फूंक मार कर जलाया और अग्नि दी। इस के पश्चात उस कमरे में पड़ी चार वस्तुओं पर झाड़ू, चड़ा, चक्की से पंचस्तवी के पहिले चार स्तवों के आविर्भूत हुए और पांचवें स्तव श्री काली वाणी के रूप में सुनाई दिया। इस चमत्कार से शंकराचार्य और उसके शिष्यों में शक्ति का सिक्का जम गया और इसी अवसर पर शंकराचार्य ने सौन्दर्यलहरी नाम की शक्ति की स्तुति की।

यह ग्रन्थ आध्यात्मिक रहस्यों और मर्मों से पूर्ण है और गुरु परम्परा तथा मुखाम्नाय से ही इस का प्रचार गुरुजन शिष्य मंडली में करते आये हैं। इसी कारण आज तक किसी ने इस की टीका नहीं लिखी।

श्री स्वामी राम जी महाराज जिन्हें आज के युग का शिवावतार कहना चाहिये ने त्रिक मत को पुनर्जीवित किया और उन्हों ने अपने शिष्यवर्ग में इस ग्रंथ के मर्मों को सुलझाते। उनके सच्छिष्य जिन में श्री गोविन्द कौल जी का नाम स्मरणीय है इस का प्रचार करते रहे।

यह पुस्तिका उन्हीं विचारों तथा विमर्शों का संकलन है परन्तु सर्वसाधारण जनता की मांग को दृष्टिगोचर रख कर और ग्रन्थ को अधिकतर बढाने के विचार से पराशर्य

को ही प्रधान रक्खा गया है और कहीं कहीं संक्षिप्त अर्थ के संकेत दिये गये हैं।

आशा है कि प्रेमी पाठकगण हमारा हमारे इस परिश्रम को हमारा उत्साह बढ़ा कर सफल करेंगे और यदि कोई त्रुटि रह गई हो तो हमें सूचित करें जिस से दूसरे संस्करण में उन त्रुटियों को दूर किया जाय।